ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

विनष्ट होने वाली ग्रामीण संस्कृति में टूटते हुए जनजाति का अस्तित्व : ' ग्लोबल गाँव के देवता '

श्रीलेखा के. एन.,

पीएच.डी. शोध छात्रा,

हिंदी विभाग, कोच्चीन विश्वविदयालय, केरल

समय बदलने से व्यक्ति और समाज की चिंतनधारा और स्वरूप बदलते रहते है | यह ऊपरी दृष्टि से सबके विकास के लिए अनिवार्य है | किन्तु इसके आंतरिक पक्ष पर गहराई से विचार किया जाये तो यह बात स्पष्ट साबित हो जाती है कि विकास के कुछ नकारात्मक पक्ष होते हैं | उदाहरण के लिए - सुस्थिर विकास मानवराशि के लिए हितकारी है किन्तु विकास के नाम पर विनाश और विनष्ट सांस्कृतिक गरिमा मनुष्य-जीव-जन्तु तथा प्रकृति के अस्तित्व के लिए हानिकारक है | आधुनिकता और आधुनिक चिंतन पद्धति पूर्णतः इसी सिद्धान्त पर आधारित है | परिवर्तन के नाम पर व्यक्ति और समाज के समूचे विकास की दावा करते हुए आज की राजनीतिक व्यवस्था भी इस विनष्ट बदलाव को पोषण दे रहा है | यह पूर्णतः पूर्व प्रचलित परंपरा और रूढ़ि तथा अंधविश्वासों में परिवर्तन की माँग करती है | इसे सचमुच आधुनिकता का देन ही कहा जा सकता है | इसके विकास में विज्ञान और तकनीकी का भी बहुत बड़ी भूमिका है |

आधुनिक बनना और नवीन विचारों को उचित रूप में आत्मसात करना तथा उसे साहित्य के द्वारा प्रस्तुत करना मात्र संवेदनशील व्यक्ति द्वारा ही संभव है | इसलिए साहित्य और समाज को एक दूसरे से जोड़ा जाता है | साहित्यकारों के मस्तिष्क में विकसित भावों और विचारों का एक मात्र स्त्रोत यह समाज है | इसलिए एक समाज को रूपायित करने की इस प्रक्रिया में साहित्यकारों का बहुत बड़ा योगदान हैं ,क्योंकि वे समाज को सजग करने के साथ-साथ समाज के सकारात्मक और नकारात्मक विकास पर भी एक सकारात्मक दृष्टि अपनाते हुए

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

आगे बढ़ते हैं | इसलिए नि:संदेह ही कहा जा सकता है कि साहित्य सामाजिक परिवर्तन का माध्यम है, इसी श्रेणी में आने वाली प्रत्येक रचना सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति है | उदाहरण के रूप में वर्तमान समय में लिखित साहित्यों को देखा जा सकता है | इसमें जीवन की हर पहलुओं को सूक्ष्मता के साथ निहारने का प्रयास साहित्यकारों ने किया हैं | स्त्री,दलित और आदिवासी समाज को निकट से देखकर उन पर विचार करने की कोशिश इस समय की रचनाओं में दृष्टिगोचर हैं |

हिन्दी साहित्यिक जगत में आदिवासी जीवन पर आधारित उपन्यासों की कोई कमी नहीं हैं | इन उपन्यासों के ज़रिए आदिवासी साहित्यकार ' आदि दर्शन ' को प्रस्तुत करके समाज को उनकी जीवन व्यवस्था से परिचित कराने की कोशिश करते हैं | गैर आदिवासी लेखक भी संवेदना और सहानुभूति से आदिवासी जीवन को साहित्य के क्षेत्र में जीवंतता प्रदान करते हैं | इसमें भारत की प्रत्येक जनजातियों और उनकी जीवन यथार्थों का चित्रण हुआ है जो पाठकों के साथ-साथ समाज को भी उनकी समस्याओं से परिचित कराने में समर्थ है | सन 2009 में लिखित रणेन्द्र का उपन्यास **' ग्लोबल गाँव के देवता '** आदिवासी जीवन की अनकही यातनाओं का प्रामाणिक दस्तावेज़ है | उपन्यास का केंद्र कथानक झारखंड के ' असुर आदिवासी' समाज के जीवन संघर्षों और नवउपनिवेशवादी ताकतों के गलत प्रभाव से उत्पन्न समस्याओं पर आधारित है | सामान्य मानव की कोटि से जब जाति और धर्म के नाम पर मनुष्य एक दूसरे से अलग हो जाते है तो वहाँ मनुष्य की स्वार्थ भावना दूसरे व्यक्ति या समाज के अस्तित्व के लिए हानीकारक बन जाता है | ऐसे एक समय में मनुष्य की दृष्टि में परिवर्तन लाना बहुत ही ज़रूरत है | इस उपन्यास की कथावस्तु खंडन-मंडन की प्रवृत्ति से ओत-प्रोत है | इसलिए यह परिवर्तन का साहित्य के अंतर्गत आता है | यहाँ परिवर्तन का साहित्य का मतलब है-पूर्व प्रचलित मान्यताओं से मुक्ति और यथार्थ की तलाश करते हुए अपनी रचना में प्रामाणिकता के साथ उसकी स्थापना |

उपन्यास में असुर आदिवासियों से संबंधित वाद-विवादों को तोड़ने के लिए और सच्चाई को स्थापित करने के लिए लेखक खुद कथावाचक का रूप ग्रहण किया है | भारतीय संस्कृति में धार्मिक ग्रन्थों और पुराणों का महत्वपूर्ण स्थान हैं | इसमें जिन जिन घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है जिसे मनुष्य अपनी परंपरा का प्रारम्भिक समय कह कर उसी के आधार पर

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

जीवन बिताते हैं | इस अर्थ में देखा जाये तो रामायण और महाभारत आदि में चित्रित घटनाओं को इतिहास का एक मुख्य बिन्दु कहा जा सकता है | सुर और असुर से संबंधित प्रसंगों का उल्लेख भी इन ग्रन्थों में हुआ है,कुछ लोग इस प्रसंग को असुर आदिवासी समाज से जोड़ते हैं | किन्तु कुछ आलोचक इसे पूर्णतया असुर जनजातियों से जोड़ने के लिए तैयार नहीं है | आदिवासी साहित्यकारों ने इन पौराणिक ग्रन्थों को शास्त्र की कोटि में रखा हैं | इस अर्थ में देखा जाये तो इन ग्रन्थों में सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य के लिए जीने की तरीके बताया गया है,किन्तु इसी संदर्भ में अत्याचारों और वर्चस्ववादी शक्तियों के खिलाफ आवाज़ उठाने वालों को निम्न कहकर उनका बहिष्कार करने की प्रक्रिया भी विद्यमान है | इसमें चित्रित असुर आदिवासियों का संघर्ष वास्तव में भारत के मूल निवासियों का संघर्ष ही हैं |

भूमंडलीकरण और बाज़ारवाद तथा उपभोगवादी संस्कृति ने समाज के ढांचे को बदल लिया | इस दौर में सबसे अधिक शोषण का शिकार गाँव और गाँव में रहनेवाले आम जनता हैं | अधिकांश आदिवासी समाज ग्रामीण परिवेश में या जंगल में जीवन बिताने वाले हैं | भूमंडलीकरण के इस युग में प्रकृति के साथ उनका जुड़ाव और आत्मीय बंधन टूट गया है | इसके फलस्वरूप गाँव में रहने वाले सामान्य से सामान्य लोगों के साथ प्रकृति भी शोषण और अत्याचार का शिकार बन गया | उपन्यास में असुर आदिवासियों के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न डालने वाले मुख्य तत्व इसी शोषणकारी व्यवस्था और गुलामी मानसिकता है | जिस पर उपन्यासकार ने गंभीरता से विचार किया है | यह भौंरापाट नामक एक छोटे से गाँव की कहानी है | वहाँ की मुख्य समस्या शिंडाल्को ,वेदांग जैसे बड़े-बड़े कंपनियों के द्वारा होने वाले अवैध बोक्साइट खनन और इससे नष्ट होने वाली गाँव की संस्कृति तथा जनता का पहचान हैं | इसके साथ-साथ पारिस्थितिक प्रदूषण,बीमारियों से ग्रसित समाज ,आर्थिक तंगी,लोगों का अभावग्रस्त जीवन,नारी शोषण,शिक्षा से वंचित समाज,धार्मिक शोषण,पुलिस – प्रशासनिक वर्गों तथा कर्मचारियों के ओर से होने वाले शोषण,शराब की समस्या ,विस्थापन की समस्या जैसे कई महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर भी उपन्यासकार ने इस उपन्यास के माध्यम से विचार किया है | इसमें शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध या प्रतिशोध का स्वर कम ही सुनाई देता हैं | यह मात्र असुर

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

आदिवासी समाज की संघर्षगाथा नहीं है , इसमें नवउपनिवेशवाद के प्रभाव को झेलने वाले संपूर्ण समाज का द्योतन भी हुआ है |

1.अवैध बोक्साइट खनन और इससे उत्पन्न समस्याएँ

उपन्यास में असुर आदिवासी समाज के जीवन परिवेश को लेखक ने गहराई से निहारा है | उपन्यास की मुख्य समस्या हैं – अवैध बोक्साइट खनन और उससे उत्पन्न पारिस्थितिक प्रदूषण | अवैध बोक्साइट खनन के समय सड़कों में अनेक गढ़ढ़े रूपायित होते हैं ,जिसमें बरसात के समय पानी भर जाता है और इसमें मछर पलते हैं ,जो आगे चलकर सेरिब्रल - मलेरिया जैसी महामारी बढ़ने के लिए कारण बन जाती हैं | इस समस्या से मनुष्य और मनुष्येतर जीवपदार्थों तथा प्रकृति का अस्तित्व टूट जाता हैं | गाँव में रहने वाले अधिकांश लोग गरीबी या आर्थिक तंगी से त्रस्त हैं ,इसलिए रोगग्रस्त होने पर सही इलाज के अभाव में लोगों की मृत्यु हो जाती हैं | उपन्यास में सोमा की बहिन उचित इलाज न मिलने के कारण मर जाने की दर्दनाक स्थिति को रणेन्द्र ने प्रस्तुत किया है | यह इस इलाके की वास्तविक दशा को दर्शाने वाली घटना है | वर्तमान समय में ऐसी कई घटनाएँ हुई हैं जो मनुष्य के जीवन-रहन की प्रक्रिया में बाधा डाल देने वाली है | प्राकृतिक संतुलन को नष्ट न करके समाजोपयोगी वस्तुओं का निर्माण करना वास्तव में इन बड़े-बड़े कंपनियों का दायित्व हैं ,किन्तु वे अपने उत्तरदायित्वों के प्रति विमुख हैं | राजनीतिक व्यवस्था में इन समस्याओं का जिक्र तक भी नहीं होता है | शासक पद पर विराजमान नेतागण जनता के पक्ष में न खड़े होकर इन शोषणकारियों को समर्थन देता रहता हैं | यहाँ अनपढ़ होकर भी गाँव के लोग अपनी समस्याओं से अवगत हैं,किन्तु सरकार या अधिकारी वर्ग उन्हें अपने दमन नीति के द्वारा दबाकर रखते हैं | इसी प्रकार ग्रामीण संस्कृति ,जल ,जंगल और प्राकृतिक संसाधन आदि नष्ट हो जाने के कारण समाज की संकल्पना भी टूट जाती हैं |

2.आर्थिक उत्पीड़न और पुलिस कर्मचारी तथा शासक का शोषण

आदिवासी समाज में आर्थिक विपन्नता का मूल कारण नष्ट होने वाले गाँव या जंगल का अस्तिव हैं | क्योंकि वे अर्थोपार्जन और जीवन यापन के लिए प्रकृति का ही सहारा लेते है |

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

किन्तु बाहरी लोगों के अवैध हस्तक्षेप में प्रकृति भी शोषण से मुक्त नहीं है | यह आदमी को गरीब और अभावग्रस्त जीवन बिताने के लिए विवश बना लेता है | कृषि पर आधारित अर्थ व्यवस्था गाँव का अलग पहचान है | किन्तु कभी कभी जमींदार और अन्य शोषक वर्ग किसान जैसे आम जनता को लूटते रहते हैं और उनका ज़मीन भी छीन लेते हैं |

ज़मीन पर अवैध हस्तक्षेप और असहमति होने पर भी अवैध भूमि हस्तांतरण आज की सबसे बड़ी विडंबना है | इसका विरोध न करना आदिवासी समाज का भविष्य के लिए खतरा है | उपन्यास में लालचन नामक एक पात्र है,जो गोनू सिंह जैसे खेखारों के शोषण का शिकार है | किसान कड़ी धूप और भारी वर्षा में भी मेहनत करके खेतीबारी करता है पर इसका फल कोई ओर ले जाते है | गोनू सिंह धन और दौलत के प्रति आकर्षित आदमी है | इसलिए वे लालचन के चाचा की खलिहान को अपनाने की कोशिश करते रहते है | वह चाचा की हत्या करता है | बाद में पुलिस मृत्यु संबंधी जांच करके एफ.आई.आर में संशोधन करते है | इसी प्रकार रक्षक ही आम लोगों के आँखों में मिट्टी डाल कर शोषक बन जाते है | इसी प्रकार न्याय व्यवस्था में भी बेगुनाह व्यक्ति को सज़ा भुगतना पड़ता है | उपन्यास के कई संदर्भों में पुलिस और शासक वर्गों के गलत नीतियों का खुलासा वर्णन हुआ है | समस्याओं के प्रति विद्रोह के समय पुलिस विद्रोहकारियों के घर में खुसते है और वहाँ के औरतों को भयभीत कराकर उनकी बलात्कार की जाती है तथा सच के स्थान पर झूठ को पोषण देते रहते है | शासक और कर्मचारी भी सही अवसर पर उचित कार्यवाही न करके लोगों को तंग करते रहते हैं | इसी प्रकार समाज के सभी क्षेत्रों में अत्याचार और संघर्ष बढ़ जाते हैं |

3.जाति के नाम पर शिक्षा से वंचित समाज

सदियों से आदिवासियों के प्रति समाज में उपेक्षा और तिरस्कार का भाव प्रचलित है | इसी सामाजिक बहिष्कार ने उन्हें अपने मूलभूत अधिकारों से अलग किया | शिक्षित होना एक जागृत व्यक्ति का सूचक है | मुख्यधारा समाज इस बात को पहचानते है ,इसलिए वे आदिवासियों को शिक्षा न देने की कोशिश करते रहते हैं | इसी प्रकार मूल अधिकारों से वंचित आदिवासी समाज शिक्षा से भी दूर हो जाता है | इसलिए वे अपने समाज

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

और जीवन परिवेशों के अंतर तक सीमित है | उपन्यास में आदिवासी बच्चों को शिक्षित कराने की उद्देश्य से सरकार सभी सुविधाओं से युक्त एक स्कूल का निर्माण करता है ,किन्तु इस स्कूल में पढ़ने वाले अधिकांश बच्चे गैर आदिवासी समाज के हैं और उनका आर्थिक पक्ष भी बेहत्तर है | इसमें उल्लेखनीय बात यह है कि स्कूल के निर्माण के समय में वहाँ रहने वाले सौ से ज़्यादा असुरों के घरों को सरकार ने उजाड़ दिया था | स्कूल के आस पास रहने वाले ज्यादत्तर बच्चे असुर जनजाति के थे ,किन्तु वे शिक्षा से पूरी तरह वंचित थे | रुमझुम इस यथार्थ पर इस प्रकार विचार करते है कि- " आखिर हमारी छाया से भी क्यों चिढ़ते हैं ये लोग ?माड़ –भात खिलाकर,अधपढ़-अनपढ़ शिक्षकों के भरोसे ,फुसलावन स्कूल के हमारे बच्चे,ज़्यादा से ज़्यादा स्किल्ड लेबर,पिऊन ,क्लर्क बनेंगे,और क्या ? यहीं हमारी औंकात है | हमारी ही छाती पर ताजमहल जैसा स्कूल खड़ा कर हमारी हैंसियत समझाना चाहते हैं लोग | "1 भौंरापाट पीटीजी गर्ल्स रेजीडेंशियल स्कूल में भी उरांव और खड़िया आदिवासी समाज के बच्चे पढ़ते है,किन्तु असुर जाति के बच्चे पूर्ण रूप से शिक्षा से वंचित है | इस स्कूल में अध्यापक के रूप में आने के लिए या बच्चों को पढ़ाने के लिए भी अध्यापक तैयार नहीं हैं ,क्योंकि यह इलाका आदिवासियों का है | उनके विचारों में आदिवासी जनता जंगली जानवरों के समान है | इसलिए उन्हें शिक्षा देकर सभ्य बनाने की कोई ज़रूरत नहीं है | इसी दृष्टिकोण से वे आदिवासियों के लिए बनाए गए सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों को पढ़ाते रहते है | इससे आदिवासी समाज में शिक्षा केवल एक सपना ही रह जाती है |

किन्तु उपन्यास में ऐसे कुछ पात्र भी है जो शैक्षिक स्तर पर निहित भेदभाव होते हुए भी उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं और अपने समाज में जागरण पैदा करते है | ललिता,रुमझुम ,सुनील आदि इसी समाज के युवावर्ग हैं जो अपने इलाके में ज्ञान का प्रचार-प्रसार करते हैं | शिक्षक बनकर रुमझुम शैक्षिक क्षेत्र में परिवर्तन लाने हेतु पीटीजी गर्ल्स रेजीडेंशियल स्कूल के बच्चों को टेस्ट के रिज़ल्ट के हिसाब से क्लास में दाखिला देने का निर्णय लेता है और इसमें सभी उसे सहयोग भी देते हैं | यहाँ रुमझुम एक शिक्षक होने के साथ ही अपने सामाजिक उत्तरदायितों के प्रति सजग युवक का प्रतिनिधि है |

4.नारी शोषण

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

उपन्यास में नारी शोषण के विविध आयामों पर भी लेखक ने विचार किया हैं | सदियों से वह पुरुष की उपेक्षा दृष्टि का शिकार है | पुरुषवर्चस्ववादी नज़रिए के अनुसार स्त्री द्वितीय पद की अधिकारी है इसलिए वह भोग की वस्तु है | यहाँ ठाकुर अंसारी साहब,किशन कन्हैया पाण्डेय,बाबा शिवदास और गोनू सिंह आदि की स्त्री के प्रति दृष्टि 'भोग' पर आधारित हैं | शराब के नशे में डूबकर व्यक्ति बेहोश हो जाता है, इसी स्थिति में वह कुछ भी करने में डरते नहीं है | यह कई प्रकार के अत्याचारों के लिए कारण बन जाते है | ठेकेदार अंसारी साहब शराबी आदमी है ,स्त्री और शराब उसे नशा प्रदान करने वाले घटक है | इसलिए वे शराब पीकर औरतों को भोगते हैं | उनकी रखैली रामरति भी उनके साथ देकर अन्य स्त्रियों को उनकी जाल में फँसा देते है | यहाँ एक स्त्री के माध्यम से भी अन्य स्त्रियों को शोषण झेलना पड़ती हैं | उपन्यास की नारी पात्र सलोनी इसी शारीरिक शोषण का शिकार है | गोनू सिंह भी स्त्रियों के शरीर के प्रति इतना आकर्षित है कि वह अपनी पत्नी की उपस्थिति में ही अन्य औरतों के साथ अनैतिक संबंध रखता है |

धर्म और धर्म केन्द्रित स्त्री शोषण वर्तमान समय का एक प्रमुख मुद्दा है | यहाँ शिवदास बाबा धर्म के नाम पर स्त्रियों का शोषण करता रहता है | इसमें छोटे बच्चे भी शामिल है | वे यौन और धार्मिक अंधविश्वासों के लिए बालिकाओं का गलत इस्तेमाल करता है और अंत में उन्हें मार देते है | वह लड़कियों के लिए एक स्कूल खोल देते हैं और उन्हें शिक्षा देने के लिए अध्यापिकाओं की नियुक्ति करके उनका भी शोषण करते हैं | उपन्यास में लालचन शिवदास बाबा से प्रभावित होकर अपने दो बेटियों को बाबा के स्कूल में भेजते है किन्तु बाबा दोनों का शोषण करते हैं | भयभीत पिता अपने बच्चियों को पुनः भौंरापाट के स्कूल में भेजते है |

5.धार्मिक शोषण

आदिवासी इलाकों में कई अंधविश्वास प्रचलित हैं | यहाँ ' अंधविश्वास ' शब्द पर ध्यान देने की आवश्यकता है | क्योंकि जो मुख्य धारा के लिए अंधविश्वास है वह सच्चे अर्थ में आदिवासी लोगों के लिए विश्वास है ,जो सदियों से उनके बीच प्रचलित है | इसमें सही और गलत का निर्णय करने की क्षमता उनमें नहीं है ,इसका मुख्य कारण अशिक्षा की समस्या और

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

ज्ञान का अभाव है | धार्मिक स्तर पर एक अलग विचारधारा को महत्व देने के कारण सन्यासी और अन्य गैर आदिवासी समाज उन्हें लूटने की कोशिश करते हैं | शिवदास बाबा मंत्र और तंत्र के नाम पर लोगों को आकर्षित करके है अंत में उन्हें धोखा देता है | शोषण मानसिकता को केंद्र में रखकर बाबा कंठीधारी शुद्धि आंदोलन का सूत्रपात करता है | इसमें भाग लेने वाले भगतों के लिए कुछ नियम भी जारी करते है जिसका उल्लंखन करने पर लोगों की मृत्यु हो जाती है या बाबा उनकी हत्या करते है | इस स्थिति में मनुष्य के साथ साथ काले रंगवाले जानवरों को भी शोषण झेलना पड़ता हैं | बाबा को समाज में बड़े बड़े नेताओं से भी सबंध है | इसलिए जब कोयलेश्वर आश्रम के पास से एक बच्चे का लाश मिलता है तो पुलिस बाबा का गिरफ्तार करते है | किन्तु पैसा और प्रभाव से वह अपनी समस्या के लिए समाधान खुद ढूंढ लेते हैं |

6.विस्थापन की समस्या

उपन्यास में अपनी मातृभूमि से अलग होने के लिए विवश आदिवासी जनता के दर्दनाक स्थिति का वर्णन हुआ है | शक्तिशाली कंपनियों की रणनीतियां ,कारखानों के निर्माण और अवैध खनन आदि इसके लिए कारणभूत तत्व हैं | यहाँ भेड़िया अभियारण के नाम पर सरकार आदिवासियों को जंगल से दूर घटाना चाहते हैं | इसके पीछे वेदान्त जैसे कंपनियों की बड़ी भूमिका है | भेड़िया अभियारण का मूल लक्ष्य आदिवासियों को अपने ज़मीन से अलग करके वहाँ नए कारखानों का निर्माण करना है | जंगल प्राकृतिक जड़ी - बूट्टियों की खजाना है | इसी प्रकार के अवैध खनन और प्रदूषण से गाँव और जंगल प्रदूषित हो जाते है और वहाँ रहने वाले लोगों को भी कई समस्याओं से गुज़रना पड़ता है | यहाँ इसका सच्चा चित्रण उपन्यासकार ने पेश किया है,यह स्थिति आज भी जारी है |

7.पूर्व प्रचलित मान्यताओं का खंडन तथा शोषण के प्रति विद्रोह

ग्लोबल गाँव के देवता नामक इस उपन्यास में लेखक ने असुर आदिवासियों के जीवन की सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष पर प्रभावात्मक ढंग से विचार किया है | इसके सृजन की पृष्ठभूमि में भौंरापाट के आदिवासी जीवन और आदिवासी समाज के साथ का रहन सहन से संबंधित उपन्यासकार का व्यक्तिगत अनुभव आदि रहा है | लेखक खुद अपने अनुभव को उपन्यास के एक संदर्भ के साथ जोड़ा है ,वे कहते हैं - “ सुना तो था कि यह इलाका असुरों का

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

है,किन्तु असुरों के बारे में मेरी धारणा थी कि खूब लंबे,चौड़े,काले-कलूटे,भयानक,दाँत – वांत निकले हुए ,माथे पर सींग-वींग लगे हुए लोग होंगे | लेकिन लालचन को देखकर सब उलट-पुलट हो रहा था | बचपन की सारी कहानियाँ उलटी घूम रही थी |"2 इसके साथ- साथ असुर आदिवासी नारी से संबंधित लेखक की पूर्व दृष्टिकोण क्या था इस पर भी एतवारी के माध्यम से लेखक ने विचार किया है – " आज हर बात मुझे चौंक रही थी | लग रहा था कि हफ्ता दिन बाद आज आँखें खुली हों | यह छरहरी –सलोनी – एतवारी भी असुर ही है ,यह जानकार ,मेरी हैरानी बढ़ गयी थी | हफ़्ता भर से इसे देख रहा हूँ ,न सूप जैसे नाख़ुन दिखे ,न खून पीनीवाले दाँत ,कैसी कैसी गलत धारणाएँ ! खुद पर ही अजब सी शर्म आ रही थी | "3 उपन्यास में आदिवासियों के प्रति सवर्ण मानसिकता किस प्रकार है इसे खुद लेखक अपने अनुभवों के माध्यम से शब्दबत्त किया है |

इस उपन्यास में अंधविश्वासों से उत्पन्न समस्या ,शराब की समस्या जैसे कई समस्याओं का अंकन भी हुआ हैं ,जो उपन्यास की आकर्षण और प्रभावात्मकता को पोषण देते है | इसके बीच-बीच में रुमझुम,डॉ.रामकुमार,लालचन,सुनील आदि के द्वारा प्रतिरोध का स्वर भी सुनाई देता है | एतवारी,बुधनी और ललिता इसी समाज की जागृत नारियां हैं,इसलिए वे खुलकर स्त्री शोषण का विरोध करती है | इसके बावजूद भी शासक,पुलिस और अधिकारी वर्ग आदिवासी विद्रोह को दबाते हुए उन्हें नक्सलवादी घोषित करते है |

इस उपन्यास में आदिवासी जीवन की सांस्कृतिक गरिमा पर रणेन्द्र ने विचार किया है | गाँव की शासन प्रणाली ,असुर आदिवासियों का इतिहास,धरती और स्त्री के आपसी जुड़ाव ,खान-पान,रहन-सहन ,विवाह,नामकरण,त्योहार,लोककथाओं का चित्रण,लोकगीतों का समन्वय और लोक भाषा का प्रयोग जैसे आदिवासी जीवन के हर पहलुओं पर इसमें विचार-विमर्श हुआ है | इसलिए उपन्यास को असुर आदिवासी जीवन की भूत और वर्तमान की साक्षी कहना उतना ही उचित है जितना यह प्रामाणिक करना कि आदिवासी भी मनुष्य हैं |

संदर्भ :-

1. रणेन्द्र – ग्लोबल गाँव के देवता – पृ.19

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

2. वही – पृ. 11

3. वही – पृ. 11

Copyright © 2020 Authors